हिंदी उपन्यासों में उम्र, अनुभव और अस्मिता: समकालीन परिप्रेक्ष्य में वृद्धावस्था का पुनर्पाठ

Sharvan Ram Bansura, Research Scholar, Department of Hindi, Sabarmati University, Gujarat

सारांश

हिंदी उपन्यास साहित्य में मानव जीवन के विविध अनुभवों, सामाजिक संबंधों, संघर्षों एवं बदलती जीवन परिस्थितियों का व्यापक चित्रण मिलता है। वृद्धावस्था मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करता है। समकालीन समाज में बदलती पारिवारिक संरचना, एकल परिवारों का विस्तार, पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी, सामाजिक उपेक्षा तथा आर्थिक निर्भरता ने वृद्ध व्यक्तियों की स्थिति को अधिक जटिल बना दिया है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य हिंदी उपन्यासों में वृद्धावस्था के चित्रण का विश्लेषण करना तथा उम्र, अनुभव और अस्मिता के पारस्परिक संबंधों को समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समझना है। इस अध्ययन में हिंदी उपन्यासों में वृद्ध पात्रों की जीवन परिस्थितियों, उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान तथा अस्तित्व संबंधी संघर्षों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह समझने का प्रयास किया गया है कि साहित्य में वृद्धावस्था को केवल निर्बलता, परनिर्भरता और जीवन के अंतिम चरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है अथवा अनुभव, ज्ञान, स्मृति, संवेदनशीलता और आत्मचेतना से युक्त एक स्वतंत्र जीवन-अवस्था के रूप में भी देखा गया है। समकालीन हिंदी उपन्यासों में वृद्ध व्यक्तियों की बदलती सामाजिक पहचान, पीढ़ीगत संघर्ष, अकेलापन, उपेक्षा, पारिवारिक विघटन तथा आत्मसम्मान की आकांक्षा जैसे विषय विशेष महत्व रखते हैं। यह शोध साहित्यिक एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के माध्यम से वृद्धावस्था के विभिन्न आयामों का पुनर्पाठ प्रस्तुत करता है। इसके अंतर्गत यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि साहित्य किस प्रकार वृद्ध व्यक्तियों के अनुभवों और उनकी अस्मिता को अभिव्यक्ति प्रदान करता है तथा समाज में उनके प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करने में योगदान देता है। निष्कर्षतः, हिंदी उपन्यासों में वृद्धावस्था का अध्ययन केवल आयु संबंधी परिवर्तन का विश्लेषण नहीं है, बल्कि यह मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान और पीढ़ियों के बीच संबंधों को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

मुख्य शब्द: हिंदी उपन्यास, वृद्धावस्था, उम्र और अनुभव, अस्मिता एवं पहचान, समकालीन साहित्य, पीढ़ीगत संघर्ष, पारिवारिक संबंध, सामाजिक उपेक्षा, आत्मसम्मान, वृद्ध विमर्श, साहित्यिक पुनर्पाठ, सामाजिक परिवर्तन